वेदोंमें विमान

(डॉ० श्रीबालकृष्णजी एम्० ए०, पी-एच्० डी०, एफ० आर० ई० एस०)

यूरोपीय विद्वानोंके मतानुसार वेदोंमें उच्च सभ्यताके नमूने नहीं हो सकते। विकासवादके अनुसार वेद एक प्राचीन और प्राथमिक मनुष्योंके गीत ही हो सकते हैं। वस्तुतः विकासवादके सिद्धान्तको सत्य मानकर ही वेद-विषयक ऐसी अटकलें लगायी जाती हैं। मेरे विचारसे तो वेद इनके विकासवादकी सत्यतापर ही कुठाराघात करते हैं। इसका एक प्रमाण वेदोंमें विमानोंका वर्णन होना है। यदि वैदिक युगमें विमान बनाये जाते थे तो उस कालकी सभ्यता अवश्यमेव उच्च होनी चाहिये। निम्न प्रमाणोंसे पाठक स्वयं निश्चित कर सकते हैं कि वेदमें 'उड़नखटोलियों'-का वर्णन है या कवियोंकी 'कपोल-कल्पना' का चित्र है अथवा 'सच्चे विमानों' का वर्णन।

ग्रिफिथने ऋग्वेदके चौथे मण्डलके ३६ वें सूक्तकी इतनी बुरी तरह हत्या की है कि वह बोधगम्य ही नहीं रहा है। यदि सायणके भाष्यसे काम लिया गया होता तो इस विवादग्रस्त प्रश्नपर अवश्य प्रकाश पड़ता। जो हो, इस ऋग्वेदीय सूक्तके निम्नलिखित मन्त्रार्थों एवं भावानुवादोंसे सरलतापूर्वक निर्धारित किया जा सकता है कि जिस वायुयानके विषयमें वर्णन मिलता है, वह काल्पनिक है या वास्तविक। मैंने सायणके अनुवादको ही अपनाया है।

'हे रैभव! तुमने जिस रथका निर्माण किया, उसमें न तो अस्त्रोंकी आवश्यकता है और न धुरीकी। यह तीन पहियोंका प्रशंसनीय रथ वायुमण्डलमें विचरण करता है। तुम्हारा यह आविष्कार महान् है। इसने तुम्हारी तेजोमयी शक्तियोंको पूज्य बनाया है। तुमने इस कार्यमें स्वर्ग एवं मर्त्यलोक, दोनोंको दृढ़ एवं धनी बनाया है' (ऋक्० ४। ३६। १)।

'प्रखरबुद्धि रैभवने ऐसे सुन्दर घूमनेवाले रथका निर्माण किया, जो कभी गलती नहीं करता। हम इन्हें अपना सोमरस पान करनेके लिये आमन्त्रित करते हैं' (ऋक्० ४। ३६। २)।

'हे रैभव! तुम्हारी महत्ताका लोहा बुद्धिमानोंने मान लिया है' (ऋक्० ४। ३६। ३)।

'विशेष तेजस्वी ऋभुओंद्वारा जिस रथका निर्माण हुआ, वे जिसकी रक्षा या जिसे प्यार करते हैं, उस रथकी मानवसमाजमें प्रशंसा है' (ऋक्० ४। ३६। ५)।

ऋभुओंद्वारा निर्मित रथ एक ऐसा अभूतपूर्व आविष्कार था, जिसकी प्रशंसा जन-साधारण एवं विद्वान्—दोनों द्वारा होती थी। इस रथने संसारमें एक सनसनी फैला दी थी।

इस वायुयानसे किसी प्रकारकी आवाज नहीं होती थी। यह अपने निश्चित पथपर वायुमण्डलमें विचरण करता था और इधर-उधर न जाकर सीधे अपने गन्तव्य स्थानको जाता था।

'यह रथ बिना अश्वके संचालित होता था' (ऋक्० १। ११२। १२ और १०। १२०। १०)। यह स्वर्णरथ त्रिकोण एवं त्रिस्तम्भ था।

ऋभुओंने एक ऐसे रथका निर्माण किया था, जो 'सर्वत्र जा सकता था' (ऋक्० १। २०। ३; १०। ३९। १२; १। ९२। २८ और १२९। ४; ५। ७५। ३ और ७७। ३, ८५। २९; १। ३४। १२ और ४७। २; १। ३४। २ और ११८। १-२ तथा १५७। ३)।

कुछ और मन्त्र देखिये—

'हे धनदाता अश्विनो! तुम्हारा गरुडवत् वेगवान् दिव्य रथ हमारे पास आये। यह मानव-बुद्धिसे भी तेज है। इसमें तीन स्तम्भ लगे हैं, इसकी गति वायुवत् है' (ऋक्० १। ४७। २)। 'तुम अपने त्रिवर्ण, त्रिकोण सुदृढ़ रथपर मेरे पास आओ' (ऋक्० १। ११८। २)।

'अश्विनो! तुम्हें तुम्हारा शीघ्रतासे घूमनेवाला विचरणशील यन्त्रयुक्त गरुडवत् रथ यहाँ ले आये' (ऋक्० १। ११८। ४)।

यहाँ विल्सन तथा कुछ दूसरोंने अश्वोंद्वारा संचालित पतंग अर्थ किया है, विमान नहीं; किंतु इन उदाहरणोंसे यह अर्थ नहीं निकलता है। कम-से-कम यह तो साफ वर्णित है कि अश्विनोंका रथ यन्त्र-कलासे निर्मित किया गया था और उसके संचालनार्थ अश्व नहीं लगे थे (देखिये—ऋक्० १। ११२। १२ और १। १२०। १०)। एक दूसरे स्थानमें सर्वत्र विचरणशील सुन्दर रथका वर्णन है (ऋक्० १। २०। ३)।

'ऋभुओ! तुम उस रथसे आओ, जो बुद्धिसे भी तेज है, जिसे अश्विनोंने तुम्हारे लिये निर्मित किया है' (ऋक्० १०। ३९। १२)।

'तुम्हारा रथ स्वर्णाच्छादित है। इसमें सुन्दर रंग है। यह बुद्धिसे भी तेज एवं वायुके समान वेगशाली है' (ऋक्० ५। ७७। ३)। 'अश्विनो! अपने त्रिकोण-त्रिस्तम्भ रथके साथ आओ' (ऋक्० १। ४७। २)।

ऋग्वेदमें वायु तथा समुद्रवाले दोनों रथोंका साफ-साफ वर्णन है (ऋक्० १। १८२। ५)।

'तुमने तुग्र-पुत्रोंके लिये महासागर पार करनेके निमित्त जीवनसंयुक्त उड़ते जहाजका निर्माण करके तुग्र-पुत्र भुज्युका उद्धार किया और आकाशसे उतरकर विशाल जल-राशिको पार करनेके लिये रथ तैयार किया।'

इसी प्रकार यजुर्वेदमें भी वायुयान-यात्राका बड़ा ही मनोहर वर्णन है—

'आकाशके मध्यमें यह विमानके समान विद्यमान है। द्युलोक, पृथिवी और अन्तरिक्ष—इन तीनों लोकोंमें इसकी अबाध गति है। सम्पूर्ण विश्वमें गमन करनेवाला और मेघोंके ऊपर भी चलनेवाला, वह विमानाधिपति इहलोक तथा परलोकके मध्यमें सब ओरसे प्रकाश देखता है' (वाजसनेयिसंहिता १७। ५९)।

ऋग्वेद और यजुर्वेदके मन्त्रोंसे ही इस लेखमें विमानोंकी विद्यमानताके प्रमाण मैंने दिये हैं। अथर्ववेदमें भी स्पष्ट प्रमाण मिलते हैं; परंतु लेखके बढ़नेके भयसे वे यहाँ नहीं दिये गये। आशा है कि वैदिक सभ्यताके इस नमूनेपर पाठक विचार करेंगे।

वेद कथाङ्क (कल्याण-गीताप्रेस)